आज का पुरुषार्थ 1 July 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज से हमारा लक्ष्य रहेगा **balance** से **blessing** प्राप्त करने की .. और याद रखेंगे इस मार्ग पर सफलता पाने का सहज साधन ही है न्यारा और प्यारा बनना "*

बाबा हम सभी को हमेशा ही एक सुन्दर प्रेरणा देते है कि ...

" बच्चे ! जीवन में वैलेंस रखो तो सबकी व्लैसिंग्स मिलती रहेंगी "

क्या अर्थ है इसका और कैसे मिलती है यह व्लैसिंग्स ?

.... व्लैसिंग्स माना **दुआयें**, सबकी **शुभ भावनायें**। वैलेंस माना सन्तुलन।

जैसे कोई **गृहस्थ** में रहता है, **योग** में रहता है, वो अपने काम धंधे भी करता है। लेकिन पुरुषार्थ में ध्यान नहीं देता। मुरली सुनी, बस ! फिर बाबा को भूला रहता है। इसको वैलेंस नहीं कहते।

लेकिन एक व्यक्ति काम काज बहुत अच्छा करता है, साथ-साथ पुरुषार्थ पर भी बहुत ध्यान देता है। सेवाओं में भी समय देता है। इसको कहते है जीवन में सन्तुलन रखना।

वैसे तो हर चीज़ में सन्तुलन रखने की जरूरत रहती है जीवन में। कार्य करना, नींद करना इसके भी सन्तुलन रहती है जीवन में। परिवार में **प्यार** देना और **detach** रहना इसके **सन्तुलन** के भी बहुत जरूरत रहती है।

कार्य व्यवहार करना, खुब सेवा करना और **मान शान से मुक्त रहना इस सन्तुलन** की भी आवश्यकता होती है।

इसतरह संतुलन रखने से **पुरुषार्थ** में सरलता आती है। हमारी रूहानी शक्तियाँ बढ़ती जाती है। सब हमसे खुश रहते है, संतुष्ट रहते है। हमारा व्यवहार अच्छा रहता है तो सबकी दुआयें मिलती रहती है।

आप दुसरों को सुख देते रहेंगे, दुसरों से प्यार रखेंगे, क्रोध आदि अहंकार हमारा कम होता जायेगा, तो लोगों के दिलों पर हम चढ़ेंगे और सबकी शुभ भावनायें मिलेंगी।

तो हम अपने जीवन में इस एक बात पर बहुत **ध्यान दे** कि, इस जीवन में रहते हमारा **श्रेष्ठ पुरुषार्थ** भी चलता रहे। समयानुसार अब वायुमंडल में चारो तरफ बहुत सारे निगेटिविटी भर गई है।

बहुत सारी **ब्राह्मण आत्मायें** इसमें बहुत ढीले पड़ गये है, निगेटिव आ गई है, आलस्य और अलवेलेपन में आ गई है। उनके विचारों में वैसी दृढ़ता नहीं रही। **हल्कापन** छा गया है।

अब इससे स्वयं को बाहर निकालना है। समय का प्रभाव हम पर न पड़े। हम समय को अपने प्रभाव में लाये। चारों ओर जो गंदे वातावरण है उसका प्रभाव हम पड़ न पड़े।

हम **master creater** बनकर वायब्रेशन्स को चेंज करनेवाला बन जाये। इसकी ब्राह्मण कुल की श्रेष्ठ आत्माओं को बहुत जरूरत है।

क्योंकि संसार जिस ढीलेपन में चल रहा है, और संसार में जिस तरह की समस्यायें प्रकोप रूप में आगे आ रही है, बीमारियाँ बढ़ रही है, ऐसा दिख रहा है कि ...

दो तीन साल के अंदर ही इस संसार को **धर्मराज** पूरी में बदलना प्रारंभ हो जायेगी।

और तब ... अच्छे **योगियों** को अपने **वायब्रेशन्स फैलाकर सर्व आत्माओं को मदद करनी पड़ेंगी।** यह हमारा परम कर्तव्य होगा। यह कर्तव्य हमें पुकारेगा।

और जिन्होंने अच्छा अभ्यास नहीं किया होगा उनको भी एहसास दिलायेगा कि तुम अब भी कुछ कर लो।

हममें से कुछ आत्मायें ऐसे है जो बहुत अच्छा पुरुषार्थ कर सकते है, जिनके पास समय बहुत होता है, विधि भी उनको मालुम है, सबका सहयोग भी उनको मिलता है, कभी किसी से टकराव भी नहीं होता ...

बहुत ज्यादा खुशी और नशें में रहते हुए नम्रता भी साथ साथ रहे। बहुत अच्छा **स्वमान का अभ्यास** करते हुए **सेवाभाव, नम्रचित्त, निर्माण** यह सब स्थिति का भी अभ्यास चाहिए।

तो यह सब वैलेंस हम साथ लेकर चलेंगे। तो हमारे जीवन में एक बहुत सुन्दर संतुलन आ जायेगा।

और **कभी भी हम निराश नहीं होंगे।** कभी हमें यह नहीं लगेगा कि हम जीवन में कुछ अच्छा पुरुषार्थ नहीं किया। पश्चाताप की लाइन में हम कभी नहीं आयेंगे।

इससे सबकी दुआयें मिलेंगी। आगे चलकर तो और भी सुन्दर होगा, जब हमारी वायब्रेशन्स से दुसरों को मदद मिलेंगे। तो गुप्त दुआयें हमें बहुत बल देती रहेंगी।

तो वैलेंस रखे, ब्लैसिंग्स ले ....

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org